Padma Bhushan

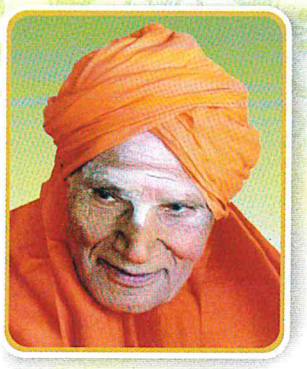

Shri Shivakumara Swamigalu

Shri Shivakumara Swamigalu, Head of Sree Siddaganga Mutt, Tumkur, is a renowned spiritual guru.

2. Born on April 1, 1908 in Veerapura, a village in Bengaluru District in the state of Karnataka, Shri Swamigalu had his early education in the village Government Schools and completed 3-year-B.A. degree programme (Physics and Mathematics) in the Academic Year 1927-28 at the Central College, Bengaluru. He was divinely attracted by the serene atmosphere of Siddaganga Mutt and the social service that was going on there. During all the 3 years of study in Central College, Bengaluru, his weekends and vacations were always spent in Siddaganga Mutt, taking part in all the service activities in the Gurukula.

3. After the demise of Shri Marularadhya Swamiji, who was the Uttaradhikari of the Mutt, in 1930, Shri Uddana Swamiji gave him the name Shri Shivakumara Swamigalu. With Shri Uddana Swamiji attaining his heavenly abode on January 11, 1941, complete responsibility of developing Siddaganga Mutt came on the shoulders of Shri Shivakumara Swamiji.

4. When Shri Swamigalu took over in 1941, the resources of the Mutt were very meagre and had a Sanskrit School, the only educational institution. The developments that have taken place in Siddaganga Mutt under the leadership of Shri Swamigalu during the last 7 decades are amazing. The Mutt at present runs more than 120 educational institutions in 6 districts of Karnataka most of them being located in rural areas, particularly to help the girl students. The number of children in Siddaganga Gurukula is at present 9000 most of them from poor rural families belonging to all religions and castes including Muslims and Christians, studying in first standard to 12th standard. In the Gurukula, they stay together, dine together and learn together. In addition to their studies, the children of the Gurukula participate in all items of social work in the Mutt and thus become self-reliant and self- regulatory, free from white collar attitude. Thus, Siddaganga Gurukula is a great experiment in the country demonstrating "Development with Inclusion".

5. Shri Swamigalu has received various awards and honours including Karnataka Ratna Award Highest Civilian Award of Karnataka Government (2007); Basava Puraskara, a national award instituted by Karnataka Government (2007); Citation in Asian Admirable Achievers brought out by Refacimento International (2008); Hindu of the Year Award given by Spiritual Sanctuary for propagating Hinduism in the distant land on the tropical island of Kauai in the middle of the Pacific Ocean, USA (2014) etc. He has also been given Honorary Doctorate (D.Lit.) by Karnataka University (1965).

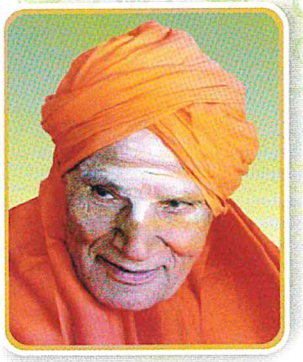

श्री शिवकुमार स्वामिगलु

श्री शिवकुमार स्वामिगलु, श्री सिद्धगंगा मठ के अध्यक्ष हैं। आप एक प्रतिष्ठित आध्यात्मिक गुरु हैं।

2. आपका जन्म अप्रैल 01, 1908 को कर्नाटक राज्य के बेंगलुरू जिले के एक गांव वीरापुरा में हुआ। आपने अपनी प्रारंभिक शिक्षा गांव में ही सरकारी स्कूलों में ग्रहण की और आपने 03 वर्षीय बी.ए. डिग्री प्रोग्रेम (भौतिकी और गणित) शैक्षणिक वर्ष 1927-28 में सेण्ट्रल कॉलिज, बेंगलुरू से पूरा किया। आप दिव्य प्रेरणा से सिद्धगंगा मठ के शान्त वातावरण और वहां की जा रही समाज-सेवा से आकर्षित हुए। सेण्ट्रल कॉलिज, बेंगलुरू में अध्ययन के तीनों वर्षों के दौरान, आपके सप्ताहान्त और अवकाश के दिन आपके द्वारा सदैव सिद्धगंगा मठ में व्यतीत किए जाते थे और आप गुरुकुल के समस्त सेवा-कार्यों में हिस्सा लेते थे।

3. सन् 1930 में, मठ के उत्तराधिकारी श्री मारूलाराध्य स्वामी जी के देहान्त के बाद श्री उड्डुन स्वामी जी ने आपको श्री शिव कुमार स्वामिगलु का नाम दिया। श्री उड्डुन स्वामी जी का जनवरी 11, 1941 को स्वर्गवास हो जाने के कारण सिद्धगंगा मठ को विकसित करने की पूरी जिम्मेदारी आपके कंधों पर आ गई।

4. जब आपने सन् 1941 में इस मठ का कार्यभार सँभाला, उस समय मठ के संसाधन बहुत ही कम थे और इस मठ में एक मात्र शैक्षिक संस्थान, एक संस्कृत विद्यालय था। आपके नेतृत्व में पिछले 7 दशकों के दौरान सिद्धगंगा मठ में किए गए विकास-कार्य आश्चर्यजनक हैं। इस समय यह मठ, कर्नाटक के 6 जिलों में 120 से अधिक शैक्षिक संस्थाओं का संचालन करता है। इनमें से सर्वाधिक संस्थाएं ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित हैं और ये संस्थाएं, विशेष रूप से बालिका छात्राओं की सहायता के लिए चलाई जाती हैं। सिद्धगंगा गुरुकुल में इस समय बच्चों की संख्या 9000 है, जिनमें से अधिकांश बच्चे सभी धर्मों और जातियों से संबंधित ग़रीब ग्रामीण परिवारों के बच्चे हैं। इनमें मुस्लिम एवं क्रिश्चियन बच्चे भी शामिल हैं, जो पहली कक्षा से 12वीं कक्षा तक में अध्ययन कर रहे हैं। गुरुकुल में वे साथ-साथ ही रहते हैं, साथ-साथ भोजन करते हैं और साथ-साथ ही पढ़ते और सीखते हैं। अपने अध्ययन के अतिरिक्त, गुरुकुल के बच्चे मठ में समस्त प्रकार के सामाजिक कार्य में हिस्सा लेते हैं और इस प्रकार वे आत्म-निर्भर और आत्म-नियंत्रक बन जाते हैं, जो समस्त सफ़ेदपोशी मनोवृत्ति से रहित होते हैं। इस प्रकार, सिद्धगंगा गुरुकुल देश में एक महान प्रयोग है जो 'समावेशन के साथ विकास' को प्रदर्शित करता है।

5. आपको विभिन्न पुरस्कारों और सम्मानों से नवाज़ा गया है, जिनमें कर्नाटक सरकार का सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार कर्नाटक रत्न पुरस्कार (2007); कर्नाटक सरकार द्वारा शुरू किया गया एक राष्ट्रीय पुरस्कार, बासव पुरस्कार (2007); रिफैसिमेंटो इंटरनेशनल द्वारा प्रकाशित एशियन ऐडमिरेबल ॲचीवर्स में साइटेशन (2008); प्रशान्त महासागर, (यू.एस.ए.) के मध्य में कौवाई उष्णकटिबन्धी द्वीप पर सुदूर भूमि में आपके द्वारा हिन्दू-धर्म का प्रचार-प्रसार किए जाने के फलस्वरूप आध्यात्मिक आश्रम द्वारा प्रदत्त हिन्दू ऑव द यीयर ॲवॉर्ड (2014) आदि शामिल हैं। आपको कर्नाटक विश्वविद्यालय द्वारा सन् 1965 में मानद डॉक्टरेट (डी.लिट.) की उपाधि भी प्रदान की गई है।